B-384
L-19
General Geography

पवनें

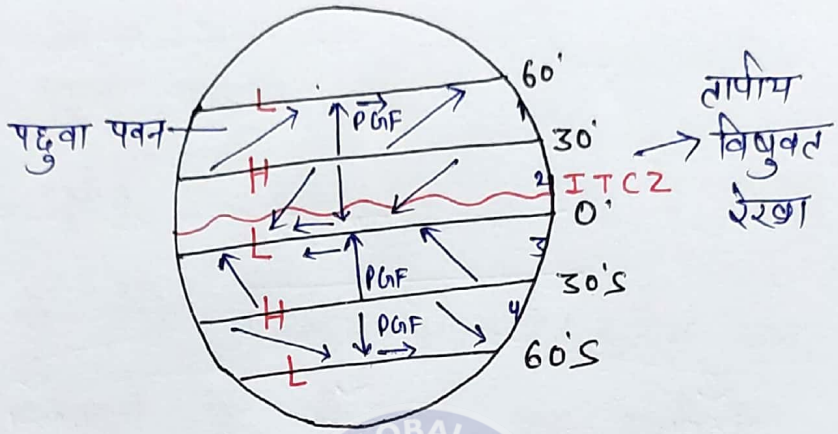

ग्रहीय / स्थायी पवन →

1. वाणिज्यिक पवन –

- 0° - 30° N.
- उत्तर पूर्वी से दक्षिण पूर्वी
- निरंतरता के लिए प्रसिद्ध (व्यापारिक)
- अंतर उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) (सूर्य ऊष्मा की स्थिति)

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

सूर्य की वार्षिक अक्षांशीय यात्रा के कारण उत्तर- दक्षिण स्थानांतरण होता है।

२. पछुवा पवन

३. ध्रुवीय पूर्वाई

ये तीनों मिलकर स्थानीय/ ग्रहीय पवन कहलाती हैं, ये वर्ष भर प्रवाहित होती हैं। इनकी दिशा और पेटी पूरे वर्ष यथावत् बनी रहती है किन्तु इन पेटियों की अवस्थिति सूर्य की वार्षिक गति के साथ उत्तर से दक्षिण खिसकती है, ये सारी पवनें सतही पवनें हैं और सतही वायुमण्डल में ऊष्मा व नमी का हस्तांतरण करने में सहायता करती हैं।

Scanned by CamScanner

अस्थायी व स्थानिक पवनें →

ये पवनें छोटी अवधि व छोटी दूरी तय करने वाली पवनें होती हैं जो 12 महीने प्रवाहित नहीं होती। ये पवनें कुछ स्थानिक कारणों जैसे- स्थल, आकृति, सागर व भूमि की स्थिति इत्यादि से प्रभावित होती हैं। उदाहरण- स्थल समीर व सागर समीर, पर्वत अपरोही पवन एवं घाटी / आरोही पवन, ब्लिजार्ड (कनाडा), चिनूक (रॉकीज)।

अस्थायी पवनों में कुछ पवनें जो समय के साथ अपनी दिशा बदलती हैं वैसी पवनें मौसमी

Scanned by CamScanner

पवनें कहलाती हैं, जैसे- मानसून।

वायुराशि व वाताग्र →

वायु के बड़े खण्ड जो हजारों किलो मीटर लम्बे 100's किलो मीटर चौड़े व 8-10 Km. ऊँचाई रखते हैं, जिनमें मुख्य भौतिक दशाओं (ताप, आर्द्रता इत्यादि) की समानता पाई जाए, वे वायुराशि कहलाते हैं।

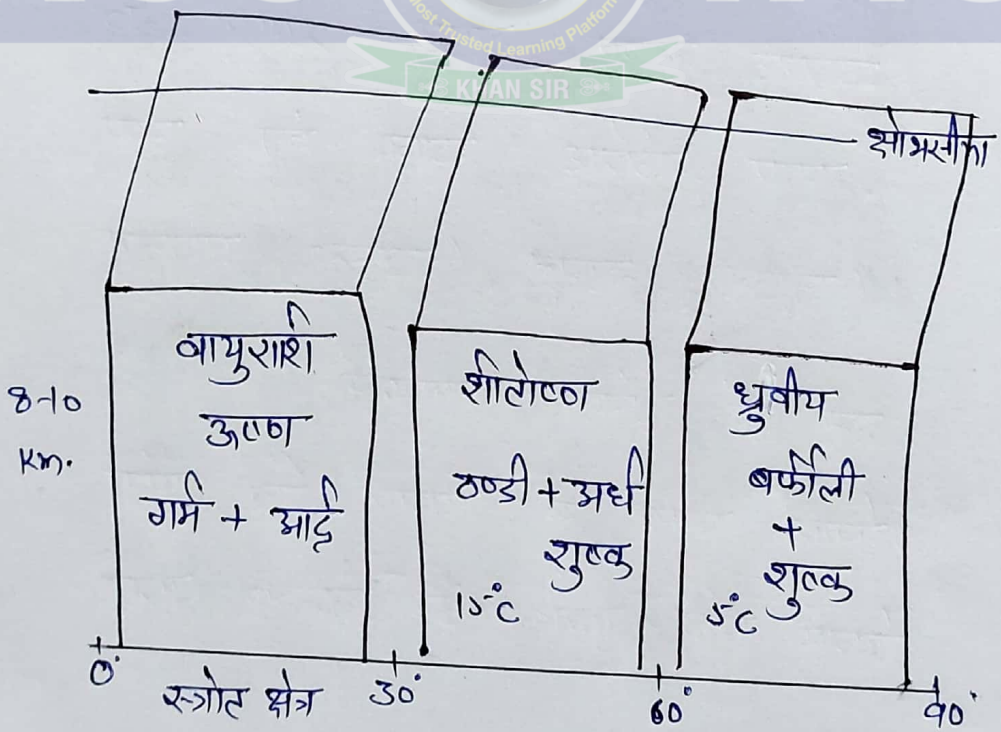

Scanned by CamScanner

वायुराशियों का वर्गीकरण उनके तापमान के आधार पर होता है, जिसमें वायुराशि २ प्रकार की हो सकती हैं-

i) गर्म वायुराशि

ii) ठण्डी वायुराशि

जब एक वायुराशि का वायु तापमान उसके नीचे की सतह से अधिक हो तो उस वायुराशि को गर्म वायुराशि कहते हैं। इसके विपरीत यदि किसी वायुराशि का तापमान उसके नीचे की सतह से कम हो तो ऐसी वायुराशि ठण्डी वायुराशि कहलाती है।

अक्षांशीय रूप से वायुराशियों का

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN

Scanned by CamScanner

वर्गीकरण उष्णकटिबंधीय और ध्रुवीय में किया गया है।

स्रोत क्षेत्र की प्रकृति के आधार पर वायुराशियों का वर्गीकरण महाद्वीपीय व महासागरीय में किया गया है।

वायुराशियों की गतिशीलता →

वायुराशियाँ अपने उत्पत्ति क्षेत्र में जन्म लेने के बाद वहाँ से विस्थापित हो जाती हैं, उनकी इस गतिशीलता का कारण दाबप्रवणता बल है।
वायुराशियाँ जब गति करती हैं तो ये एक-दूसरे से टकराती हैं किन्तु वायुराशियाँ एक-दूसरे में आसानी से नहीं मिलती इसलिए

Scanned by CamScanner

दो वायुराशियों के सम्पर्क में एक संक्रमण का क्षेत्र बनता है जिसे वाताग्र कहा जाता है। वातागीय क्षेत्र में किसी भी वायुराशि के शुद्ध गुण नहीं मिलते अपितु एक विशेष संक्रमण क्षेत्र का निर्माण होता है।

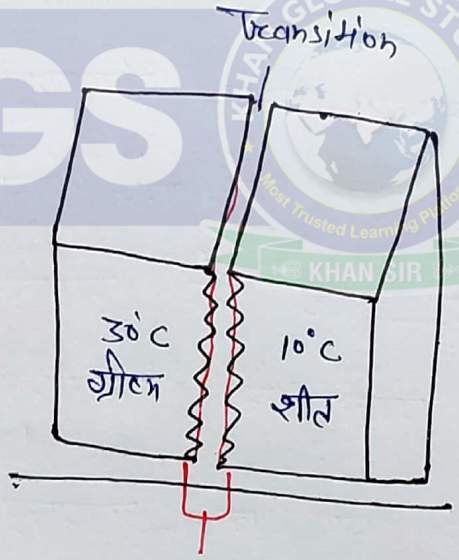

वाताग्र का निर्माण

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner